शतरंज के खिलाड़ी और सवा सेर गेहूँ कहानी के सौ साल

डॉ.रमेश चंद्र सोनी

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजा श्री कृष्ण दत्त डिग्री कॉलेज,जौनपुर, उ. प्र.

Author Email: rameshsoni5795@gmail.com

सारांश- 'शतरंज के खिलाड़ी' और 'सवा सेर गेहूँ' दोनों मुंशी प्रेमचंद की प्रमुख कहानी है। इन दोनों की रचना सन 1924 में हुई थी। प्रेमचंद की कहानियाँ आदर्श, यथार्थ तथा सामाजिक जागरुकता का संदेश देती हैं। दोनों कहानियां सौ साल पूरे होने के बाद आज भी प्रासंगिक हैं। जिस उदेश्य से प्रेमचंद ने इन कहानियों की रचना की थी शायद उन समस्याओं, अंधविश्वासों और सामाजिक कुरूपताओं से आज भी समाज निकल नहीं पाया है। 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी अंग्रेजी शासन तथा स्वाधीनता आंदोलन के समय भारतीय समाज की स्थिति को प्रकट करती है। प्रेमचंद अपने दो पात्रों के माध्यम से भारतीय समाज की कायरता,विलासिता तथा कर्तव्यच्युत हो जाने की दशा को बखूबी दिखाने का प्रयास करते हैं। आज भी समाज बेरोजगारी, हत्या, बलात्कार,गरीबी से जूझ रहा है। सामंती मानसिकता समाज में व्याप्त है परंतु इसके खिलाफ वाला सत्ता का एक बड़ा हिस्सा मौन है। समाज में राजनीतिक रोटी सेंकने और चापलूसी करने वालों की तादात ज्यादा है। 'सवा सेर गेहूँ' कहानी किसानों पर होने वाले शोषण को बयां करती है। कहानी में शंकर नाम का एक कुर्मी किसान है जो एक अतिथि साधु के आतिथ्य सत्कार के लिए अपने गाँव के एक ब्राम्हण से सवा सेर गेहूँ उधार मांग लेता है। गेहूँ लौटाना भूल जाते हैं, कुछ वर्षों के बाद विप्र महराज याद दिलाते हैं। और सूद समेत सवा सेर गेहूँ का हर्जाना विप्र महाराज की कुटिलता से इतना बड़ा हो जाता है कि वह किसान भरते भरते मर जाता है लेकिन भर नहीं पाता। बाद में शंकर के बेटे को भी उसी ऋण को भरने के लिये महराज पकड़ लेते हैं। कहानी की प्रासंगिकता इस बात में है कि आज भी किसानों का शोषण कम नहीं हो रहा है बस शोषण के माध्यम बदल गए हैं।

मुख्य शब्द – स्वाधीनता, आधिपत्य, विलासिता, जीवंतता, कर्तव्यच्युत, जागीरदार, सामंती।

'शतरंज के खिलाड़ी' मुंशी प्रेमचंद की यह कहानी माधुरी पत्रिका में अक्टूबर 1924 को छपी थी। इस कहानी में प्रेमचंद अंग्रेजी शासन तथा स्वाधीनता आंदोलन के समय भारतीय समाज की दिशा और दशा को दिखाने का प्रयास किया है। कहानी में लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह का पतन और अंग्रेजी सेना का उस पर आधिपत्य हो जाना वह भी इतनी शांति और अहिंसा से, यह नवाब के अधिकारियों और नागरिकों की कायरता और विलासिता को प्रकट करता है। इस कहानी की जीवंतता आज भी बनी हुई है, यह कहानी अपने दो पात्रों मिर्जा सज्जाद और मीर रोशन अली के माध्यम से हमारे समाज के कर्तव्यच्युत होने की दशा को बयां करती है । नवाब अंग्रेजी सेना द्वारा बंदी बना कर ले जाया जाता है और उसके जागीरदार शतरंज की बाजी जीतने में व्यस्त हैं । उनको अपने राजा, अपने देश और अपने लोगों की तनिक भी चिंता नहीं है। ऐसी सामंती मानसिकता से हमारा देश, हमारा समाज जूझ रहा है। आज समाज में गरीबी , बेरोजगारी, हत्या, बलात्कार की घटनायें दिन दिन घट रहीं हैं लेकिन सत्ता का एक बड़ा हिस्सा ऐसा है जिनको इन घटनाओं से कोई मतलब नहीं है। उन्हें अपनी राजनीतिक रोटी सेंकने से फ़ुरसत कहाँ है। उन्हें पहले अपनी कुर्सी की फिक्र है। यह कहानी आज ऐसी मानसिकता वाले लोगों पर सवाल खड़ी करती है।

वर्तमान में सांप्रदायिकता बहुत तेजी से पैर पसार रही है। लोग एक विशेष वर्ग, जाति, धर्म, समुदाय में बंटते चले जा रहे हैं। अपने अपने हित के लिए जनता जान देने के लिए तैयार है परंतु समग्र देश, समाज, दुनिया का सपना देखने वाला कोई नहीं, लोग अपने कर्तव्यों से विमुख होते जा रहें हैं। इस चिंता को कहानी में प्रेमचंद व्यक्त करते हैं, "मुहल्ले में जो भी दो- चार पुराने जमाने के लोग थे, आप में भांति भांति की अमंगल कल्पनाएं करने लगे-अब खैरियत नहीं । जब हमारे रईसों का यह हाल है तो मुल्क का खुदा हाफिज है। यह बादशाहत शतरंज के हाथों तबाह होगी। आसार बुरे हैं।" प्रेमचंद की यह चिंता आज सामाजिक पतन की मानसिकता को प्रकट करती है। आज भी अपने को पढ़ा लिखा और जागरूक समझने वाला युवा कुछ ऐसे काम करते हैं जो स्वयं के लिए और समाज के लिए हितकर नहीं है तिसपर उन्हें बड़े बुजुर्गों का समझाना अच्छा नहीं लगता है, परंतु इसका महत्व बाद में समझ आता है।

आज का समय प्रतिस्पर्धा का है, सभी को एक दूसरे से आगे निकलने की जद्दोजहत है। ऐसे में हम कई गलतियाँ करते हैं लेकिन उसका ठीकरा दूसरे के सिर पर फ़ोड़ने में जरा भी नहीं हिचकते हैं। यही स्थिति कहानी में एक पात्र मिर्जा सज्जाद की है, वे खुद की गलती न मानकर कई बार मीर रोशन को दोषी बनाते हैं। मिर्जा साहब की बेगम साहिबा के बारे में प्रेमचंद लिखतें हैं, "उनको अपने पति से उतना मलाल न था जितना मीर साहब से। उन्होंने उसका नाम मीर बिगाड़ू रख छोड़ा था। शायद मिर्जा जी अपनी सफाई देने के लिए सारा इल्जाम मीर रोशन के सिर थोप देते थे।" ऐसे ही एक बार मिर्जा साहब शतरंज की बाजी जीत रहें होते हैं और उसी वक्त बेगम साहिबा के सिर में दर्द होने लगता है, वैद के यहाँ जाने के लिए बेगम का बार –बार बुलावा आने पर तथा मीर रोशन के जोर देने पर वह बड़े कस्मकश से अपने को शतरंज से अलग कर बेगम के पास जा पातें हैं, और तब बेगम के गुस्सा होने पर वह तुरंत अपना दोष न देकर मीर रोशन को दोषी बनाते हुए कहते हैं, "क्या कहूँ मीर साहब मानते ही न थे। बड़ी मुश्किल से पीछा छुड़ाकर आया हूँ।" ऐसे बेपरवाह पात्र आज भी समाज में बिचरते हमें दिख जाएंगे। यह कहानी आज भी प्रासंगिक है, प्रेमचंद अपने अचूक लेखन से समाज को उसके कर्तव्यबोध के प्रति आगाह करते हैं।

अंग्रेजों ने 1856 में अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह को बंदी बनाकर कलकत्ता भेज दिया और लखनऊ को अपने अधीन कर लिया था।अवध का राजनीतिक पतन हिंदुस्तान की एक बड़ी घटना थी, क्योंकि यह भारत का हृदय इलाका था और इस घटना ने भारत में अंग्रेज राज को बहुत मजबूत कर दिया। इस घटना से प्रजा पर कोई खास असर नहीं पड़ता, प्रजा विलासिता में इस कदर डूबी हुई थी कि उसे अपने नवाब का बंदी बना कर लिया जाना दिखा ही नहीं। प्रेमचंद लिखते हैं, "नवाब वाजिद अली शाह पकड़ लिये गए थे और सेना उन्हें किसी अज्ञात स्थान को लिए जा रही थी। शहर में न कोई हलचल थी, न मार- काट । एक बूँद भी खून नहीं गिरा था। आज तक किसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शांति से इस तरह खून बहे बिना न हुई होगी। यह अहिंसा नहीं थी, जिस पर देवगण प्रसन्न होते हैं। यह कायरपन था जिस पर बड़े से बड़े कायर आँसू बहाते हैं। अवध के विशाल देश का नवाब बंदी बना चला जाता था और लखनऊ ऐश की नींद में मस्त था। यह राजनीतिक अध:पतन की चरम सीमा थी।" यह समस्या समसामयिक दौर में देखी जा सकती है। आज हम स्वार्थी होते जा रहे हैं, जहाँ हमें विरोध करना चाहिए वहाँ चुप रहतें हैं। हमें खुद के काम से मतलब होता है। हम अपने घर, वाहन, सुख- सुविधाओं तक सीमित हैं। इसी आलसीपन और नाकामियों का फायदा सत्ताएं उठतीं हैं, क्योंकि हमारे पास एकता की कमी है, सांप्रदायिकता का जहर इस कदर समाज में फैल चुका है कि हम एक हो ही नहीं सकते, और इसका लाभ व्यवस्थाओं को मिलता है। उनके लिए तो आम जनता केवल और केवल वोट बैंक है, आज व्यवस्थाओं से बड़ी आसानी से आम आदमी हारता चला जा रहा है।

'सवा सेर गेहूँ' कहानी नवंबर 1924 में चाँद पत्रिका में छपी थी। यह कहानी तत्कालीन समाज में होने वाले किसानों के शोषण तथा विप्रवादी सत्ता पर केंद्रित हैं। यह कहानी आज भी हमारे अंतस को झकझोर देती है, और यह प्रश्न करती है कि क्या आज भी ऐसी सोच वाली मानसिकता के विप्र समाज में हैं? अगर हैं तो उन्हें इस दौर में अपनी मानसिकता बदलने की जरूरत है। कहानी में शंकर नाम का एक कुरमी किसान है जो बिल्कुल सीधा-साधा गरीब आदमी है। एक-एक दिन किसी तरह से अपने परिवार का भरण- पोषण करते हुए जीवन काट रहा है। एक दिन उसके द्वार पर एक साधु आते हैं,अतिथि के लिए उसके मन में श्रद्धा है। वह उन्हें शरण देता है। शंकर खुद तो कभी चबेना खा कर,कभी पानी पी कर अपना जीवन निर्वाह कर रहा था, लेकिन साधु को वह यह सब कैसे खिला सकता था ? शंकर गेहूँ की खोज में गाँव में घूमता है, लेकिन उसे गेहूँ मिलता नहीं, क्योंकि गाँव में सब गरीब ही थे । सौभाग्य से गाँव के एक विप्र महराज के यहाँ से सवा सेर गेहूँ मिल जाता है । इस तरह गेहूँ के आटे से वह अतिथि सत्कार करता है। शंकर को यह नहीं पता था की इस सवा सेर गेहूँ का हर्जाना उसका पूरा जीवन निगल लेगा। उस सवा सेर गेहूँ का सूद विप्र महाराज की कुटिल चाल से कुछ वर्षों में इतना अधिक हो जाता है कि शंकर उसे भरते भरते अपनी जीवन की लड़ाई हार जाता है लेकिन भर नहीं पाता।

इस कहानी की प्रासंगिकता आज भी है। किसानों के जीवन से संबंधित साहित्य की आज कोई कमी नहीं है, किसानों की जो समस्याएं प्रेमचंद के समय में थीं वे आज भी हैं, केवल शोषण के माध्यम बदल गए हैं। आए दिन समाचार पत्रों में किसान आत्महत्या की खबरें मिलती हैं , हम उनकी आत्महत्या के पीछे के कारणों को समझ सकते हैं। वर्तमान में वैश्वीकरण तेजी से अपना पैर पसार रहा है, हम विश्व को एक परिवार के रूप में विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ऐसे में पूँजीवाद भी बढ़ता जा रहा है। अमीर और अमीर बन रहे हैं तथा गरीब और गरीब होता जा रहा है। जो भी विकसित बनने की धारणाएं हैं वह केवल पूँजीपतियों और सत्ताधारियों के लिए है न की गरीब किसानों के लिए। किसानों की स्थिति देश में आज भी वैसी है जैसी स्वतंत्रता के पहले थी बहुत मामूली सुधार देखा जा सकता है। जमीन किसान के लिए मरजाद तब भी थी और आज भी है। सत्ताएं

किसानों की उपजाऊ जमीन अपनी लुभावनी योजनाओं के लिए ससमय ले तो लेती हैं लेकिन उनकी जमीन के बदले उन्हें मुआवजा या वैसी उपजाऊ जमीन उनसे मिल नहीं पाती है। किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य आज भी नहीं मिल पाता, दलाल यहाँ भी जाल बिछाए बैठे हैं। अनेक प्रकार के ऋण हैं जो बैंकों के माध्यम से किसानों को सरकार दे रही है, लेकिन फसल अच्छी न होने के कारण समय से ऋण की भरपाई न कर पाना, और ऐसी स्थिति में अपनी जमीन को बेंचकर ऋण का भुकतान करना, किसानों के लिए यह एक बहुत त्रासदपूर्ण है। ऐसे समय में सरकार की किसानों की प्रति कोई सहानुभूति नहीं होती। ऐसी दशा में किसान मजबूर होकर आत्महत्या का कदम उठातें हैं।

किसान का एक मजूर बन जाता यह त्रासद स्थिति होती है। समाज में अंधविश्वास आज भी अपनी जड़े जमाया हुआ है, इससे उबर पाना बड़ा मुश्किल है। सवा सेर गेहूँ कहानी में किसान शंकर का मजूर बन जाने के पीछे विप्र महाराज द्वारा फैलाया गया अंधविश्वास भी एक बड़ा कारण है। विप्र महाराज उसे स्वर्ग- नरक के नाम से डराते हैं, शंकर डर भी जाता है और वह कहता है, "एक तो ऋण वह भी ब्राम्हण का, बही में नाम रह गया तो सीधे नरक में जाऊंगा, इस खयाल ही से उसे रोमांच हो जाता है। बोला, 'महाराज तुम्हारा जितना होगा यहीं दूँगा, ईश्वर के यहाँ क्यों दूँ। इस जनम में तो ठोकर खा ही रहा हूँ, उस जनम के लिए क्यों काँटे बोऊँ'?" शंकर का यह डर ही था जो दिन रात एक करके अपने पेट की परवाह किए बगैर विप्र महाराज से अपने को उऋण करने में लगा रहा। प्रेमचंद कहते हैं कि 'अगर शंकर थोड़ा तार्किक होता तो कह देता कि ठीक है मैं ईश्वर के पास जाकर अपने ऋण चुका दूँगा।' लेकिन वह कह नहीं सका।

समाज में आज बड़े बुद्धिजीवी और तार्किक लोग अपने को अंधविश्वास से अलग नहीं कर पा रहें हैं, वे अनेक रूढ़ियों से ग्रसित होते हैं। स्वर्ग-नरक, अगला जनम, पिछला जनम, आदि का भय क्या केवल गरीबों के लिए है, ब्राम्हनों को इसका कोई भय नहीं है? शंकर जब विप्र महाराज से कहता है की आपने सवा सेर गेहूँ का रहस्य साढ़े सात साल छुपाए रखा अगर पहले बता दिया होता तो मैं आज इतनी मुश्किल हालत में नहीं पड़ता, आपको ईश्वर माफ नहीं करेगा। तब विप्र महाराज कहते हैं, "वहाँ का भय तुम्हें होगा मुझे क्यों होने लगा। वहाँ तो अपने ही भाई –बंधु हैं। ऋषि- मुनि सब तो ब्राम्हण ही हैं, देवता ब्राम्हण हैं, जो कुछ बने- बिगड़ेगी संभाल लेंगे।" ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं यह आज भी मिथ और कल्पना मात्र ही है। लेकिन ईश्वर को भी विप्र महाराज अपनी जाति, वर्ग में रखतें हैं यह बड़ी विडंबना है।

आज समाज में साधु- महात्माओं की स्थिति क्या है? हम बखूबी देख-समझ रहे हैं। इसमें से कितनों के योग-सिद्धि की पोल खुल चुकी है। विडंबना यह है कि सत्ता भी इनकी गुलाम दिखाई देती है। कहानी में शंकर सवा सेर गेहूँ साधु के अतिथि सत्कार के लिए लेकर आता है। साधु महात्मा आतिथ्य ग्रहण कर सुबह आशीर्वाद दे कर चले जाते हैं। यह विचार करने की बात है की उसके बाद से शंकर के जीवन में केवल दुख ही दुख देखा जा सकता है। जैसे – शंकर का भाई मंगल उससे अलग हो जाता है, पूरी जायदाद दो हिस्से में बँट जाती है, वह किसान से मजूर बन जाता है, सवा सेर गेहूँ का सूद विप्र महाराज की चालाकी से साढ़े सात साल में साढ़े पाँच मन हो जाता है, इस ऋण को चुकाने के लिए शंकर को विप्र महाराज जो अब महाजन बन गए थे के यहाँ जीवन भर की गुलामी करनी पड़ जाती है, और यही नहीं शंकर के मरने के बाद उसके जवान बेटे को विप्र महाराज दबोच लेते हैं। यह सोचने योग्य है कि उस आशीर्वाद का क्या फल मिला उस गरीब किसान को? इसलिए आज एक ऐसा तबका है जो साधु-महात्माओं की सिद्धि पर संदेह करता है, तथा उनके ज्ञान की खिल्ली उड़ाता है।

कहानी का सौवाँ साल चल रहा है, उस समय जो समस्याएं थी वह कुंडी मार कर आज भी आदमी के मनोमस्तिष्क में विराजमान हैं। दुनिया आज विकास के पथ पर बहुत आगे जा चुकी है, तार्किकता और बौद्धिकता आधुनिक मनुष्य की विशेषता है। लेकिन ऐसे क्या कारण हैं कि हम इन समस्याओं से खुद को अलग ही नहीं कर पा रहें हैं? यह कहानी आज भी यह सोचने के लिए मजबूर करती है।

संदर्भ

1. शतरंज के खिलाड़ी, प्रेमचंद, मानसरोवर भाग –तीन, वाणी प्रकाशन,2022 नई दिल्ली।
2. सवा सेर गेहूँ , प्रेमचंद, मानसरोवर भाग –चार, वाणी प्रकाशन, 2022 नई दिल्ली।